10

महायज्ञ का पुरस्कार

पाठ - 10
सहायता का पुरस्कार

विधा - कहानी
लेखक - श्री यशपाल जैन

सोचो और बताओ -

(क) इस कहानी का मुख्य संदेश क्या है ?

उ॰ इस कहानी का मुख्य संदेश यह है कि हमें दीन-दुखी तथा भूखे जीव की सहायता करना चाहिए।

(ख) सेठानी का हृदय उल्लास से क्यों भर गया ?

उ॰ सेठानी का हृदय उल्लास से इसलिए भर गया क्योंकि विपत्तियों के भार से दबे होने पर भी सेठ ने अपना धर्म नहीं छोड़ा।

(ग) 'सेठानी अपने पति की सच्ची सहचारिणी है।' आप इस कथन से कहाँ तक सहमत हैं ?

उ॰ 'सेठानी अपने पति की सच्ची सहचारिणी है।' मैं इस कथन से पूर्णतया सहमत हूँ।

(घ) विपत्तियों के भार से दबे होने पर भी सेठ ने धर्म क्यों नहीं छोड़ा ?

उ॰ विपत्तियों के भार से दबे होने पर भी सेठ ने धर्म

इसलिए नहीं घोड़ा क्योंकि सेठ जी मानवोचित गुणों से भरपूर थे।

(ङ) क्या इस कहानी का कोई दूसरा शीर्षक भी हो सकता है ? बताओ।

उ॰ इस कहानी का शीर्षक लेखक श्री यशपाल जैन ने बहुत ही अच्छा 'महायत्न का पुरस्कार' रखा है, दूसरा शीर्षक "सच्चा यत्न" भी हो सकता है।

लिखित–

(क) सच्चा यत्न किसे कहते हैं ?

उ॰ दीन-दुखियों की सहायता करना, भूख से व्याकुल जीवों को भोजन देना तथा ठंड से मरते लोगों की रक्षा करना ही सच्चा यत्न है।

(ख) आजकल धार्मिक कृत्यों के पीछे लोगों का क्या उद्देश्य रहता है ?

उ॰ आजकल धार्मिक कृत्यों के पीछे लोगों का उद्देश्य परंपरा का निर्वाह, प्रदर्शन अथवा उनका कोई न कोई स्वार्थ रहता है।

(ग) सेठानी कौन-सा महायत्न खरीदना चाहती थी और क्यों ?

उ॰ सेठानी मरणासन्न कुत्ते को दिए गए जीवनदान वाले महायत्न को खरीदना चाहती थी क्योंकि वास्तव में सच्चा यत्न तो यही है।

(घ) सेठ ने महायन्त्र बेंचने से इनकार क्यों कर दिया?

उ॰ सेठ ने महायन्त्र बेंचने से इनकार इसलिए कर दिया क्योंकि संकट भले ही हो लेकिन मानवोचित कर्तव्य का मूल्य लेना कैसे संभव हो सकता है।

(ङ) सेठ को अपने सुकर्म का क्या पुरस्कार मिला?

उ॰ सेठ को अपने सुकर्म के फलस्वरूप हीरे-जवाहरातों से भरा एक विशाल तहखाना पुरस्कार में मिला।

रचनात्मक कौशल -

1. "परहित सरिस धरम नहि भाई" इस पंक्ति में व्यक्त विचारों को कम से कम 100 शब्दों में लिखो।

उ॰ यह पंक्ति गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित 'रामचरितमानस' की है। पूरी चौपाई इस प्रकार है-

परहित सरिस धरम नहि भाई।
पर पीड़ा सम नहि अधमाई॥

धर्म की व्याख्या करते हुए गोस्वामी तुलसीदास जी कहते हैं कि दीन-दुखी, निर्धन, अपाहिज आदि का भला करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। प्रकृति को देखो तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे सब परोपकार ही कर रहे हों। व्यक्ति को जहाँ तक संभव हो सके, दूसरे व्यक्ति का हित अर्थात् भलाई करनी चाहिए। यही सबसे बड़ा धर्म है, पूजा है, तीर्थाटन है। इससे बड़ा कोई धर्म है ही नहीं। तभी तो कहा गया है-

'परहित सरिस धरम नहि भाई'

N.O.

MCQ (बहुविकल्पीय प्रश्न)

2. सही उत्तर पर (✓) का निशान लगाओ-

(क) जो सर्वजनहिताय, सर्वजन सुखाय हो वही **हमारा कर्त्तव्य** [✓] **हमारा धर्म** [ ] है।

(ख) अपने कर्त्तव्य का पालन करना **सच्चा यज्ञ** [✓] **झूठा यज्ञ** [ ] है।

(ग) हम अपना कर्त्तव्य निभाकर किसी पर **एहसान** [✓] **अभिमान** [ ] नहीं करते हैं।

(घ) धन वैभव होने पर भी हमें **विनम्र और उदार** [✓] **जिद्दी और कठोर** [ ] रहना चाहिए।

(ङ) हमें भी **दान-पुण्य** [✓] **पाप** [ ] करना चाहिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो-

(क) सेठ एवं सेठानी अदृश्य वाणी को सुनकर कृतकृत्य हुए।

(ख) हमें जीवों पर दया करनी चाहिए।

(ग) हमें मानवोचितकर्त्तव्यनहीं छोड़ना चाहिए।

(घ) हमें हमेशा मानवोचित कार्य करने चाहिए।

(ङ) हमें सुख-दुख दोनों में समान व्यवहार करना चाहिए।

4. दिए गए शब्दों से वाक्य बनाओ-

भंडार - मेले में झूलों का भंडार है।

संदेश - स्वामी विवेकानंद के संदेश अनुकरणीय हैं।

उल्लास - कुल्लू के दशहरे का उल्लास देखते ही बनता है।

सुकर्म - सुकर्म का फल हमेशा अच्छा होता है।

पुरस्कार - सेठ-सेठानी को जवाहरातों से भरा तहखाना पुरस्कार में मिला।

भाषा कौशल

1. दो या दो से अधिक परस्पर संबंधित शब्दों के मेल से बने शब्द को समास कहते हैं।

जैसे- धर्मपरायण - धर्म में परायण।

क्षुधा पीड़ित - क्षुधा से पीड़ित।

पाठ में आए ऐसे पाँच समास शब्द ढूँढ़कर लिखो-

क्रय-विक्रय

विपद-ग्रस्त

महाजन

लोटा-डोर

धर्मशाला

2. बच्चो! क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र् ये संयुक्ताक्षर कहलाते हैं क्योंकि ये दो-दो व्यंजनों के मेल से बने हैं-

क्ष् = क् + ष्

ज्ञ् = ज् + ञ्

त्र् = त् + र्

श्र् = श् + र्

नोट- इनका प्रयोग केवल संस्कृत (तत्सम) के शब्दों में ही होता है।

निम्नलिखित वर्ण का प्रयोग करके दो-दो शब्द बनाओ-

क्ष् -	कक्षा	अक्षर
त्र् -	पवित्र	मित्र
ज्ञ् -	विज्ञान	ज्ञान
श्र् -	परिश्रम	श्रम

रचनात्मक कौशल

1. "धन्ना सेठ और उनकी पत्नी केवल यज्ञ/महायज्ञ खरीदने वाले व्यापारी हैं जो धार्मिक वृत्ति तथा सामान्य व्यवहारिकता से शून्य हैं।" इस कथन की सत्यता सिद्ध करो।

2. 'जब सेठ यज्ञ न बेंच पाने पर निराश होकर घर लौट आए।' तब से अंत तक की कहानी अपने शब्दों में लिखो।

3. 'परहित सरिस धरम नहि भाई' इस पंक्ति में व्यक्त विचारों को कम से कम 100 शब्दों में लिखो।